M. A. Semester - I
Philosophy C.C - 03

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Theory of Knowledge of Plato

(Part - III)

Plato के अनुसार 'Thing in itself' का ज्ञान ही सत्य है अनुभव जगत् परिवर्तनशील है अतः ये मात्र आभास मात्र हैं। यहाँ Plato का मत Kant से भिन्न हो जाता है क्योंकि Kant के अनुसार 'Thing in itself' ज्ञानातीत है इसलिए इनके सम्बन्ध में ज्ञान की सत्यता और असत्यता की बात ही नहीं की जा सकती, उनके अनुसार अनुभव जगत् ही यर्थाथ ज्ञान की दृष्टि में वास्तविक है। (Plato के अनुसार Thing in itself का ज्ञान होता है Kant के अनुसार नहीं)

अपनी उक्त मीमांसा के आधार पर Plato अपनी पुस्तक 'Republic VI' में ज्ञान के चार प्रकारों — 'प्रतिभासिक', 'व्यावहारिक', 'बौद्धिक' और 'Rational insight' मानकर स्वीकार करते हैं, अन्तिम Rational insight ही सर्वोच्च ज्ञान है, क्योंकि इसके विषय Ideas हैं और द्वन्द्व न्याय से प्राप्त किया जाता है। यह ज्ञान ऐन्द्रिक विषयों से परे विशुद्ध Ideas का ही ज्ञान है।

इस प्रकार Plato के अनुसार Idea ज्ञान ही वास्तविक ज्ञान है, क्योंकि इसके विषय ही अपरिणामी, सामान्य, नित्य और शाश्वत होते हैं जो कि ज्ञान के वास्तविक विषय हैं। Plato के अनुसार ऐसे ज्ञान के खोज ही दर्शन का प्रधान लक्ष्य है।

Scanned with CamScanner

अस्तु, प्लेटो की ज्ञान मीमांसा स्पष्ट हो जाती है, अब हम इसकी समीक्षा करेंगे।

अरस्तू प्रभृति दार्शनिकों की आलोचना है कि प्लेटो ने अपनी ज्ञान मीमांसा में ज्ञेय को वास्तविक मानकर अनुभूत जगत् को असत् मान लिया है, जबकि अनुभूत जगत् की सत्ता प्रतीत होती है।

किन्तु प्रत्यालोचना स्वरूप कहा जा सकता है कि प्लेटो के ज्ञान मीमांसा के प्रति यह आलोचना ठीक नहीं क्योंकि प्लेटो ने कभी अनुभव जगत् को असत् नहीं माना है। अपनी ज्ञान मीमांसा में स्वीकार करता है कि अनुभव जगत् से ही प्रत्ययों का संस्मरण होता है। फिर अपने तत्वमीमांसा में भी वह मानता है कि अनुभव जगत असत् नहीं बल्कि प्रत्यय जगत् की भिन्नव्यक्ति है। यह बात प्लेटो के 'पार्मेनाइडीज' नामक ग्रन्थ में मिलता है और ऐसा लगता है कि अरस्तू ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है।

फिर प्लेटो के प्रति यह भी आक्षेप किया जाता है कि वह ज्ञेय को सामान्य, नित्य, अपरिणामी और गतिशून्य मानता है और स्वीकार करता है कि अनुभव जगत् का ज्ञान इन ज्ञेयों के माध्यम से होता है किन्तु अनुभव जगत् की वस्तुओं में गति और परिवर्तन है अतः यह बात समझ में नहीं आती कि अपरिणामी, गतिशून्य ज्ञेय से गतिशील और परिवर्तनशील अनुभव जगत् के वस्तुओं का ज्ञान कैसे होता है? अतः आलोचकों के अनुसार प्लेटो के दर्शन की यह कमजोरी है।

इस प्रकार प्लेटो के ज्ञान मीमांसा के प्रति तथाकथित आलोचनाएँ की जाती है, फिर भी उसके ज्ञान मीमांसा का महत्व इस बात में है कि उसी से रेखा वगैरह विचारों अपनी

ज्ञान मीमांसा का सूत्र प्राप्त करते हैं। अतः आज के विकसित दार्शनिक युग में यद्यपि कि प्लेटो का ज्ञान सिद्धान्त संगत नहीं हो सकता फिर भी उसका ऐतिहासिक महत्व काफी है।

× ——— ×

Scanned with CamScanner